dEiuh vf/kfu;e 2013 dh /kkjk 143 ¼6½¼[k½ ds vUrxZr ,vj bafM;k fyfeVsM ds 31 ekpZ 2017 dks lekIr o"kZ ds foÙkh; fooj.kksa ij Hkkjr ds fu;a=d ,oa egkys[kk ijh{kd dh fVIi.k;kaA

कंपनी अधियिनम 2013 के अंतर्गत विहित वित्तीय रिपोर्टिंग ढांचे के अनुसार 31 मार्च 2017 को समाप्त वर्ष के लिए एअर इंडिया लिमिटेड के वित्तीय विवरणों को तैयार करने का उत्तदायित्व कंपनी के प्रबंधन का है। अधिनियम की धारा 139 (5) के तहत भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक द्वारा नियुक्त सांविधिक लेखा परीक्षक अधिनियम की धारा 143 (10) के तहत विहित लेखा परीक्षण मानकों के अनुसार स्वतंत्र लेखा परीक्षा के आधार पर अधिनियम की धारा 143 के अंतर्गत इन वित्तीय विवरणों पर अपनी राय व्यक्त करने के लिए उत्तरदायी है। उनकी दिनांक 29 दिसम्बर, 2017 की लेखा परीक्षा रिपोर्ट के अनुसार ऐसा किया हुआ कहा गया है।

मैंने भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की ओर से अधिनियम की धारा 143(6) (क) के अंतर्गत एअर इंडिया लिमिटेड के 31 मार्च, 2017 को समाप्त वर्ष के वित्तीय विवरणों की अनुपूरक लेखा परीक्षा की है। यह अनुपूरक लेखा परीक्षा, सांविधिक लेखा परीक्षकों के दस्तावेजों के बिना स्वतंत्र रूप से की गई जो सांविधिक लेखा–परीक्षकों की इन्क्वायरी और कंपनी के कार्मिकों तथा कुछ लेखा खातों की सीमित जांच–पड़ताल पर आधारित थी।

अपनी अनुपूरक लेखा परीक्षा के आधार पर मैं अधिनियम की धारा 143 (6)(ख) के अंतर्गत निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण मुद्दों को उजागर करना चाहता हूं जो मेरे ध्यान में आए हैं तथा मेरे विचार से वित्तीय विवरणों तथा संबद्ध लेखा परीक्षा रिपोर्ट को बेहतर रूप से समझने के लिए आवश्यक हैं।

ykHkiznrk ij fVIi.kh
jktLo
vU; vk; # 3180-7 fefy;u #i, ¼uksV 16½

एअर इंडिया लि0 ने एएएसएल द्वारा देर में किए गए भुगतानों पर ब्याज के रूप में 1364.10 मिलियन रुपए की राशि डेबिट की है। चूंकि एएएसएल अपनी स्थापना के समय से ही हानि अर्जित कर रही है तथा उसकी नेट वर्थ निगेटिव है इसलिए लेखों में ब्याज को आय के रूप में दिखाना लेखांकन मानक 9 के प्रावधानों के अनुरूप नहीं है। निगेटिव नेथ वर्थ के साथ हानि में रहने वाली अपनी सहायक कंपनी से प्राप्त होने वाले ब्याज को प्राप्य ब्याज के रूप में दिखाने के परिणामस्वरूप 1364.10 मिलियन रुपए से हानि को कम दिखाया गया है तथा अन्य आय को अधिक दिखाया गया है।

foÙkh; ykxr ¼uksV la[;k 19½
vU; m/kkj ykxrsa 3009-9 fefy;u #i,

उक्त में 249.90 मिलियन रुपए की राशि भी सम्मिलित है जिसे एआईएटीएसएल द्वारा वर्ष 2014–15 तथा 2015–16 के लिए बकाया देयों पर ब्याज के रूप में प्रभारित किया गया है। चूंकि यह राशि पिछले वर्ष से संबंधित है इसलिए इसे पूर्वावधि व्यय में प्रभारित किया जाना चाहिए था। इस राशि को वित्तीय प्रभार में शामिल किए जाने के परिणामस्वरूप इतनी राशि से पूर्वावधि व्यय कम दिखाए गए तथा वित्तीय लागत अधिक दिखाई गए ।

foÙkh; fLFkfr ij fVIi.kh

fLFkj ifjlaifÙk;ka ¼uksV 8½
vU; fLFkj ifjlaifÙk;ka
vkCtsDV Mh vkVZ 'kwU; #i,

एअर इंडिया के पास मूल्यवान पेंटिंग्स, लकड़ी पर कारीगरी, ब्रॉन्ज्स, टैक्सटाइल्स, कलमकारी, भित्ति चित्र घड़ियां, किताबें, फोटोग्राफ्स, प्रिंट्स, वाटर कलर पेंटिंग्स, ग्लास पेंटिग्स तथा कढ़ाई कार्य आदि हैं। वित्त वर्ष 2015–16 तक इन मदों को फर्नीचर तथा फिक्सचर के अंतर्गत ग्रुप किया गया था। वित्तीय वर्ष 2016–17 के दौरान कंपनी ने एक अलग ग्रुप ''ऑबजैक्ट डी आर्ट'' के रूप में इन्हें अन्य स्थिर परिसंपत्तियों के अंतर्गत पुनः समूहबद्ध किया तथा 31 मार्च 2017 तक के वित्तीय विवरणों में इन्हें शून्य

मूल्य पर दिखाया गया। तथापि इन मदों को शून्य मूल्य पर दिखाए जाने के संबंध में लेखों के भाग के रूप में अनुसूचियों में कोई प्रकटन नहीं किया गया इसलिए लेखों से संबंधित अनुसूचियों में इस संबंध में कमी है।

xj pkyw fuos'k ¼uksV 9½& 16717-7 fefy;u #i,

लेखांकन मानक–13 ''अकाउंटिंग ऑफ इनवेस्टमेंट'' के अनुसार कमी के लिए प्रावधान को निवेश के मूल्य में कमी के (अस्थायी से इतर) रूप में किया जाना चाहिए और यह कमी प्रत्येक निवेश के लिए अलग–अलग निर्धारित की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त, जहां भी दीर्घकालिक निवेश की अग्रेषित राशि में कमी हो (अस्थायी से इतर) तो अग्रेषित राशि में उसकी परिणामी कमी को लाभ एवं हानि विवरण में प्रभारित किया जाना चाहिए तथापि यह देखा गया कि:

i) कंपनी ने एयरलाइन एलाइड सर्विसिज लि0 (एएएसएल) की इक्विटी पूंजी में 4022.5 मिलियन रुपए का निवेश किया। 31 मार्च 2017 को कंपनी की 13440 मिलियन रुपए की निगेटिव नेट वर्थ के साथ कंपनी की हानि 2827.2 मिलियन रुपए थी। तथापि कंपनी ने निवेश की राशि में आई कमी के लिए कोई प्रावधान नहीं किया जो एएस–13 के अंतर्गत आवश्यक था। यह प्रावधान न किए जाने के कारण वर्ष के लिए प्रावधान तथा हानि दोनों ही 4022.5 मिलियन रुपए से कम दिखाए गए।

ii) कंपनी ने एअर इंडिया इंजीनियरिंग सर्विसिज लि0 (एआईईएसएल) की इक्विटी पूंजी में 1666.7 मिलियन रुपए का निवेश किया। कंपनी द्वारा लगाई 1666.7 मिलियन रुपए की शेयर पूंजी पर 31.3.2017 को कंपनी की संचित हानि 13060 मिलियन रुपए थी। कंपनी ने एआईईएसएल की इक्विटी पूंजी में निवेश के मूल्य में कोई कमी नहीं दिखाई है इसके परिणामस्वरूप वर्ष के दौरान हानि के लिए प्रावधान को 1666.7 मिलियन रुपए कम दिखाया गया।

vkLFkfxr dj ifjlEifÙk;k ¼uksV 47½ 28425-2 fefy;u #i,

लेखा मानक –22 जो यह बताता है कि सभी समयावधि अंतर के लिए आस्थगित कर निर्धारण होने चाहिए और ऐसा करते हुए व्यवहार कुशलता बरतते हुए यह ध्यान में रखना जरूरी है कि इन आस्थगित कर परिसंपत्तियों से भविष्य में पर्याप्त कर योग्य आय उपलब्ध होने की निश्चितता बनी हो।

कंपनी ने वर्ष 2007–08 और 2008–09 के दौरान के अपने लेखा खाते में 28425.2 मिलियन रुपए की राशि का आस्थगित कर परिसम्पत्ति के रूप में निर्धारण किया। यद्यपि कंपनी ने वर्ष 2009–10 से प्रभावी आस्थगित कर परिसंपत्ति का निर्धारण नहीं किया और 2007–08 और 2008–09 से अग्रेषित आस्थगित कर परिसंपत्ति को बट्टेखाते में नहीं डाला।

तद्नुसार आस्थगित कर सम्पत्तियों के अग्रेषण से आस्थगित कर सम्पत्तियों का विवरण अधिक हो गया और हानि के विवरण में 28435.2 मिलियन रुपए कम दिखाए गए।

pkyw ifjlEifr;k

bUoasUVjh ¼uksV 13½ 12767 fefy;u #i,

I) इनवेन्टरीज़ नोट 1 (सी) (4) (ii) पर महत्त्वपूर्ण लेखानीति के अनुसार प्रारंभिक इश्यू के समय एक्सपेंडेबल्स/कन्ज़्यूमेबल्स को चार्ज ऑफ किया जाता है केवल उन्हें छोड़ दिया जाता है, जो मरम्मत योग्य मदों की मरम्मत के लिए होती हैं तथा मरम्मत कार्य के पूरा होने पर संबंधित कार्य आदेश की समाप्ति पर व्यय में दर्शाए जाते हैं। कंपनी ने पहले ही पूरे हो चुके कार्य आदेशों के लिए जारी एक्सपेंडेबल्स हेतु 324.37 मिलियन रुपए का प्रावधान नहीं किया। जारी किए गए एक्सपेंडेबल्स का प्रावधान न किए जाने के परिणामस्वरूप वर्ष के दौरान हानि को 324.37 मिलियन रुपए कम दिखाया गया तथा इसी राशि से इनवेंटरी को अधिक दिखाया गया।

ii) इनवेंटरी शेष (सबंधित जीएल में दर्शाया गया) के समर्थन में मदवार विवरण न होने के कारण एकत्रित इनवेंटरी की राशि 12723.31 मिलियन को सरुक्षित नहीं माना जा सका।

egÙoi.kZ y[kk uhfr ij fVIif.k;k
fLFkj ifjlEifÙk;kW i¸jk ¼d½¼i½¼[k½

I) उक्त नोट के अनुसार रोटेबल्स/रिपेयरेबल्स को स्थिर सम्पत्ति में दिखाया गया। हांलाकि यह पाया गया कि 31 मार्च 2017 तक रिपेयरेबल्स को इनवेंटरी में दर्शाया गया जो कंपनी की लेखा नीति के अनुसार नहीं है।

buoUVjh t i¸jk ¼r½

ii) इस नोट के अनुसार इनवेंटरीज़ का मूल्य निर्धारण वेटेड एवरेज कॉस्ट के अनुसार किया जाता है। तथापि एएस–2 के अनुसार इनवेंटरीज़ का मूल्य निर्धारण लागत या निवल वसूल योग्य मूल्य जो भी कम हो, के अनुसार होना चाहिए।

vU; fVIif.k;k
ukV la- 43 ch ¼d½
vkijfVx yht

नोट सं. 43 बी (क) (i) का संदर्भ लें जिसमें कंपनी द्वारा नॉन केंसलेबल ऑपरेटिंग लीज़ पर लिए गए 31 विमानों का उल्लेख है। संविदा की बाध्यता के अनुसार, लीज अवधि समाप्त होने पर निर्धारित तकनीकी शर्तो के अनुसरण में कंपनी को 31 विमान पट्टादाता को रिडिलीवर करने होंगे। इनकी रिडिलीवरी से पहले इनके तकनीकी निरीक्षण, मेंनटेनेंस चैक्स, मरम्मत लागत इत्यादि पर लागत आएगी। चूंकि इन कार्यो पर होने वाले खर्चे का आकलन संभव नहीं है, इसलिए इसकी देयता को आकस्मिक देयताओं के रूप में दर्शाया जाना चाहिए।

ukV la- 51
xkbx dUlu

लेखों का भाग बनने वाली टिप्पणियों के नोट संख्या 51 का संदर्भ लें जिसमें यह प्रकट किया गया है कि ''कंपनी ने प्रचालनात्मक/वित्तीय निष्पादन जैसे सीट घटक, यात्री वहन, विमान उपयोग इत्यादि में समग्र रूप से सुधार दर्शाया है, अप्रत्याशित परिस्थितियों को छोड़कर कंपनी आशावान है कि वह टीएपी में वर्णित समय–सीमा से पूर्व ही कैश पॉज़िटिव स्थिति में लौट आएगी। टर्न अराउंड योजना (टीएपी)/वित्तीय पुनर्संरचना योजना (एफआरपी) के तहत कंपनी को वित्त वर्ष 2012–13 से ब्याज कर मूल्यह्रास और ऋण परिशोधन (ईबीआईटीडीए) से पूर्व कैश पॉज़िटिव और वित्त वर्ष 2017–18 से कैश सरप्लस करने की आशा थी। तथापि, वित्तीय पुनः संरचना योजना के तहत नवीनतम प्रस्तावित वित्तीय योजनाओं के अनुसार कंपनी अब वित्त वर्ष 2018–19 से ही कैश पॉज़िटिव होगी। इसलिए यह प्रकटन कि ''अप्रत्याशित परिस्थितियों को छोड़कर कंपनी आशावान है कि वह टीएपी में वार्णित समय–सीमा से पूर्व ही कैश पॉज़िटिव स्थिति में लौट आएगी'' उस सीमा तक सही नहीं है।

Lor= y[kk ijh{kdk dh fjikV
vuyXud 1¼i¸jk 1½% fLFkj ifjlifÙk;k

स्वतंत्र लेखा परीक्षकों ने रिपोर्ट की है कि कंपनी द्वारा स्थिर परिसंपत्ति रजिस्टर मेंटेन किया जा रहा है, जो कुछ वैयक्तिक मदों के संबंध में अद्यतन होने की प्रक्रिया में है और इनमें वे मदें भी सम्मिलित हैं जिन्हें ऑन लाइन आइटम और कंपोनेंट्स आइटम्स के रूप में ब्लॉक स्तर पर सैप में स्थानांतरित कर दिया गया है।

उपर्युक्त रिपोर्टिंग सीएआरओ 2016 के खंड 3(i) (क) तथा कंपनी (लेखा परीक्षक की रिपोर्ट) आदेश 2016 के संबंध में मार्गदर्शन नोट के पैरा संख्या 34 के अनुसार नहीं है जिसमें इस रिपोर्टिंग को अनिवार्य बताया गया है कि कंपनी स्थिर परिसंपत्तियों की स्थिति और मात्रात्मक विवरण सहित पूर्ण विवरण दर्शाते हुए उपयुक्त रिकॉर्ड मेंटेन कर रही है अथवा नहीं।

लेखा परीक्षा के लिए प्रस्तुत इनवेंटरी प्रमाणपत्र से यह नोटिस किया गया है कि 3948.97 रुपए के रिपेयरेबल्स रैमको से बाहर मेंटेन किए जा रहे हैं और उनके वर्तमान स्थान की सूचना उपलब्ध नहीं थी तथा उनका वास्तविक सत्यापन नहीं किया गया था। स्वतंत्र लेखा परीक्षकों द्वारा इस तथ्य की सूचना नहीं दी गई है।

अतः स्थिर परिसंपत्तियों के संबंध में स्वतंत्र लेखा परीक्षक द्वारा की गई रिपोर्टिंग सीएआरओ 2016 के अपेक्षाओं के अनुसार नहीं है।

ekbxzs'ku daVªksy vdkmaVl dk uku&fjdkWfUlfy,'ku

(i) लीगेसी सिस्टम से सैप–ईआरपी में डाटा स्थानांतरण के दौरान सृजित किया गया माइग्रेशन कंट्रोल अकाउंट इन लेखों में कुल बकाए को शून्य किए बिना अभी भी मौजूद हैं।

ekbxzs'ku daVªksy vdkmaV dk uke	jkf'k ¼fefy;u e½
एमएम	773.2
एपी	47425.4
एआर माइग्रेशन कंट्रोल अकाउंट	45658.9
एफए माइग्रेशन कंट्रोल अकाउंट	346619.4
जीएल	254308.2

यद्यपि निवल प्रभाव शून्य है, प्रत्येक लेखा माइग्रेशन कंट्रोल अकाउंट का न तो मिलान किया गया है और न ही उसे रद्द किया गया है।

(ii) 89 परिसम्पत्तियों सहित 18404 परिसंपत्तियां जिनमें भूमि और भवन सम्मिलित हैं, कंपनी के सैप–ईआरपी सिस्टम में मौजूद हैं, वे शून्य अर्जन मूल्य पर दर्शाई गई हैं। इन 18404 परिसम्पत्तियों में से 781 परिसम्पत्तियां चालू वित्त वर्ष 2016–17 के दौरान खरीदी गई थीं। भूमि और भवन वाली इन 89 परिसम्पत्तियों को शून्य मूल्य पर दर्शाया जाना लेखा मानक 10 की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं है जिसके अनुसार किसी स्थिर परिसम्पत्ति का सकल अंकित मूल्य या तो उसकी मूल लागत होना चाहिए अथवा मानक के अनुरूप पुनर्मूल्यांकन राशि होना चाहिए।

कृते एवं की ओर से
भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक

हस्ता./–
ruqtk feÙky
iz/kku funs'kd okf.kfT;d ys[kk ijh{kk
,oa insu lnL;] ys[kk ijh{kk cksMZ&II eqacbZ

दिनांक : 7 मार्च, 2018
स्थान : मुंबई

31 ekpZ 2017 dks lekIr o"kZ ds fy, ,vj bafM;k fyfeVsM ds foÙkh; fooj.kksa ij dEiuh vf/kfu;e 2013 dh /kkjk 143 ¼6½ ¼[k½ ds varxZr Hkkjr ds fu;a=d ,oa egkys[kk ijh{kd dh fVIif.k;ksa ij izca/ku oxZ ds mÙkj

Lkh, th dh fVIi.kh	izca/ku ds mÙkj
ykHkiznrk ij fVIi.kh jktLo vU; vk; % 3180-7 fefy;u #i, ¼uksV 16½ एअर इंडिया लि0 ने एएएसएल द्वारा देर से किए गए भुगतानों पर ब्याज के रूप में 1364.10 मिलियन रुपए की राशि डेबिट की है। चूंकि एएएसएल अपनी स्थापना के समय से ही हानि अर्जित कर रही है तथा उसकी नेटवर्थ निगेटिव है इसलिए लेखों में ब्याज को आय के रूप में दिखाना लेखांकन मानक 9 के प्रावधानों के अनुरूप नहीं है। निगेटिव नेथवर्थ के साथ हानि में रहने वाली अपनी सहायक कंपनी से प्राप्त होने वाले ब्याज को प्राप्य ब्याज के रूप में दिखाने के परिणामस्वरूप 1364.10 मिलियन रुपए से हानि को कम दिखाया गया है तथा अन्य आय को अधिक दिखाया गया है।	एअर इंडिया (एआई) एफआरपी के अधीन है तथा इसलिए केवल अपनी कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उधार ले सकती है। तथापि, एअर इंडिया ने अपनी सहायक कंपनियों को उनकी कार्यशील पूंजी की आवश्यकता के लिए फंड प्रदान किया था तथा जिसके कारण एअर इंडिया को अपनी कार्यशील पूंजी की आवश्यकता से अधिक ऋण लेना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप अतिरिक्त ब्याज लागत का भार बढ़ा। एएएसएल को अपना बिज़नेस चलाने के लिए आवश्यक रूप से फंड उधार लेना पड़ा तथा जिससे ब्याज व्यय उत्पन्न हुआ होगा। इस स्थिति में एआई ने उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए फंड प्रदान किया। इसलिए एआई द्वारा यह निर्णय लिया गया कि वित्तीय वर्ष 2013–14 से सहायक कंपनियों को उनकी फंड आवश्यकता के लिए दी गई राशि के अनुसार ही उनके साथ ब्याज विभाजित व वसूल किया जाएगा। तदनुसार, वर्ष के दौरान एएएसएल से प्राप्य बकाया देयों पर ब्याज लागत की प्रतिपूर्ति/शेयरिंग के लिए कंपनी ने 1364.1 मिलियन रुपए की राशि 31.3.2017 को एएएसएल को डेबिट कर दी है। एएस–9 के अनुसार, राजस्व निर्धारण तभी स्थगित किया जाना चाहिए जब अंतिम वसूली की उपयुक्त निश्चितता न हो। एएएसएल भारत सरकार द्वारा एफआरपी अनुमोदित है तथा निकट भविष्य में इसके टर्न अराउंड की आशा है जैसा कि आगामी पैराग्राफ में दर्शाया गया है। अतः कंपनी को प्रभारित ब्याज की वसूली में किसी अनिश्चितता का अनुमान नहीं है तथा ब्याज आय का निर्धारण एएस–9 के अनुसार किया गया है। तदनुसार, एएस–9 का अनुपालन किया गया है क्योंकि एएएसएल से निश्चित रूप से राशि वसूल हो जाएगी। इसलिए, न तो हानि को कम दर्शाया गया है न ही आय को अधिक दर्शाया गया है।

Lkh, th dh fVIi.kh	iccU/ku d mÙkj
foÙkh; ykxr ¼ukV l[;k 19½% **vU; m/kkj ykxr 3009-9 fefy;u #i,** उक्त में 249.9 मिलियन रुपए की राशि भी सम्मिलित है जिसे एआईएटीएसएल द्वारा वर्ष 2014–15 तथा 2015–16 के लिए बकाया देयों पर ब्याज के रूप में प्रभारित किया गया है। चूंकि यह राशि पिछले वर्ष से संबंधित है इसलिए इसे पूर्वावधि व्यय में प्रभारित किया जाना चाहिए था। इस राशि को वित्तीय प्रभार में शामिल किए जाने के परिणामस्वरूप इतनी राशि से पूर्वावधि व्यय कम दिखाए गए तथा वित्तीय लागत अधिक दिखाई गई ।	ऊपर उल्लिखित सिद्धांत का अनुसरण करते हुए, एआईएटीएसएल ने एआईएल द्वारा एआईएटीएसएल को देय बकाया पर ब्याज प्रभारित किया है जिसे नीचे ''वित्त लागत'' के तहत दर्शाया गया है। सम्मिलित राशि बहुत अधिक नहीं है तथा यह केवल लेखा शीर्ष के वर्गीकरण का मामला है व इसलिए ब्याज राशि को पूर्वावधि व्यय के बजाय वित्त लागत में सम्मिलित करने से वर्ष के लाभ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है।
foÙkh; fLFkfr ij fVIi.kh **fLFkj ifj lifÙk;k ¼ukV 8½** **vU; fLFkj ifj lifÙk;k** **vkCk tDV Mh vkV 'kU; #Ik,** एअर इंडिया के पास मूल्यवान पेंटिंग्स, लकड़ी पर कारीगरी, ब्रॉन्ज्स, टैक्सटाइल्स, कलमकारी, भित्ति चित्र, घड़ियां, किताबें, फोटोग्राफ्स, प्रिंट्स, वाटर कलर पेंटिंग्स, ग्लास पेंटिग्स तथा कढ़ाई कार्य आदि हैं। वित्त वर्ष 2015–16 तक इन मदों को फर्नीचर तथा फिक्सचर के अंतर्गत ग्रुप किया गया था। वित्तीय वर्ष 2016–17 के दौरान कंपनी ने एक अलग ग्रुप ''ऑबजैक्ट डी आर्ट'' के रूप में इन्हें अन्य स्थिर परिसंपत्तियों के अंतर्गत पुनः समूहबद्ध किया तथा 31 मार्च 2017 तक के वित्तीय विवरणों में इन्हें शून्य मूल्य पर दिखाया गया। तथापि, इन मदों को शून्य मूल्य पर दिखाए जाने के संबंध में लेखों के भाग में रूप में अनुसूचियों में कोई प्रकटन नहीं किया गया इसलिए लेखों से संबंधित अनुसूचियों में इस संबंध में कमी है।	''ऑबजैक्ट डी आर्ट'' के संबंध में उल्लेखनीय है कि एआई के पास बहुमूल्य पेंटिंग्स, लकड़ी की कलाकृतियां, ब्रॉन्ज्स, टैक्सटाइल्स, कलमकारी, भित्ति चित्र आदि हैं तथा विगत वर्षों में इनमें से अधिकांश उपहार के रूप में प्राप्त हुईं हैं इसलिए इनका मूल्यांकन नहीं किया गया है। अतः प्राप्त वस्तुओं को लेखा बहियों में मूल लागत पर लेखाबद्ध किया गया है। तदनुसार, उक्त मदों का सकल बही मूल्य 0.6 मिलियन रुपए है जिसे अलग प्रकार की मदों के रूप में लेखा बहियों के वित्तीय विवरणों में स्थिर परिसंपत्तियों की अनुसूची में दर्शाया गया है। पिछले वर्ष के लेखों को अंतिम रूप देते समय सरकारी लेखा परीक्षा को दिए गए आश्वासन के अनुसार, ''ऑबजैक्ट डी आर्ट'' को 0.6 मिलियन रुपए के सकल ब्लॉक मूल्य पर वित्तीय वर्ष 2016–17 के स्थिर परिसंपत्ति शेड्यूल में अलग से दर्शाया गया है तथा इसमें 0.6 मिलियन रुपए का संचित मूल्यह्रास दर्शाया गया। चूंकि इन्हें वित्तीय विवरणों में अलग प्रकार की मदों में दर्शाया गया है अतः इन्हें लेखों की टिप्पणियों में दोहराने की आवश्यकता नहीं है। इसके अतिरिक्त, एअर इंडिया की स्थिर परिसंपत्तियों हेतु लेखांकन नीति में स्पष्ट रूप से यह उल्लिखित है कि इन परिसंपत्तियों को मूल लागत पर दर्ज किया जाए, इस मामले में यह 0.6 मिलियन रुपए है। लेखांकन मानकों तथा कंपनी अधिनियम के अनुसार, अनिवार्य सभी पर्याप्त प्रकटीकरण किए गए हैं, अलग से अतिरिक्त नोट दिया जाना अपेक्षित नहीं है।

Lkh,th dh fVIi.kh	izca/ku dk mÙkj
xSj pkyw fuos'k ¼uksV 9½&16717-7 fefy;u #Ik, लेखांकन मानक–13 ''अकाउंटिंग ऑफ इवेस्टमेंट'' के अनुसार कमी के लिए प्रावधान को निवेश के मूल्य में कमी के (अस्थायी से इतर) रूप में किया जाना चाहिए और यह कमी प्रत्येक निवेश के लिए अलग–अलग निर्धारित की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त, जहां भी दीर्घकालिक निवेश की अग्रेषित राशि में कमी हो (अस्थायी से इतर) तो अग्रेषित राशि में उसकी परिणामी कमी को लाभ एवं हानि विवरण में प्रभारित किया जाना चाहिए तथापि यह देखा गया कि:	
I) कंपनी ने एयरलाइन एलाइड सर्विसिज लि0 (एएएसएल) की इक्विटी पूंजी में 4022.5 मिलियन रुपए का निवेश किया। 31 मार्च, 2017 को कंपनी की 13440 मिलियन रुपए की निगेटिव नेट वर्थ के साथ कंपनी की हानि 2827.2 मिलियन रुपए थी। तथापि कंपनी ने निवेश की राशि में आई कमी के लिए कोई प्रावधान नहीं किया जो एएस–13 के अंतर्गत आवश्यक था। यह प्रावधान न किए जाने के कारण वर्ष के लिए प्रावधान तथा हानि दोनों ही 4022.5 मिलियन रुपए से कम दिखाए गए।	एएएसएल क्षेत्रीय संपर्क प्रदान करने वाली एयरलाइन है तथा जो भारत सरकार की उड़ान योजना के अनुसार उपयोग न किए जा रहे व कम उपयोग किए जा रहे एयरपोर्टों के लिए हवाई संपर्क उपलब्ध कराने के दृष्टिगत 12 वर्षों की लीज़ अवधि पर अतिरिक्त एटीआर 72 विमान चरणबद्ध रूप से अपने बेड़े में शामिल कर रही है। तदनुसार, 2016–17 के दौरान अनेक नए विमान, बेड़े में शामिल किए गए हैं जिससे फरवरी 2018 के अंत में एएएसएल के विमान बेड़े में विमानों की कुल संख्या 16 हो गई है। एएएसएल के राजस्व में वृद्धि हो रही है (2015–16 की तुलना में 2016–17 में 37 प्रतिशत की वृद्धि) तथा कंपनी को विश्वभर में एआई नेटवर्क को फीडर सपोर्ट प्रदान करने के अतिरिक्त ऐसे क्षेत्रीय नेटवर्क मार्गों के माध्यम से स्व–निर्भरता के भावी लक्ष्य के साथ आने वाले वर्षों में बेहतर निष्पादन का अनुमान है। अतः संभवतः इसके निवल मूल्य में कमी अस्थायी है। टीएपी के अनुसार, कंपनी को निकट भविष्य में ब्रेक इवेन/पोस्ट नकदी लाभ होने का अनुमान है। अतः जैसा कि लेखों के नोट में प्रकट किया गया है इस अवस्था में निवेश के मूल्य में कमी को स्थायी नहीं माना गया है। उल्लेखनीय है कि एएएसएल में निवेश से एयरलाइन की इक्विटी पूंजी में निवेश की अपेक्षा उच्चतर मूल्य की वसूली का अनुमान है। अतः यह निष्कर्ष देने का कोई औचित्य नहीं है कि एएएसएल में एआई के निवेश को शून्य मान लिया जाए। इसलिए वर्ष के लिए प्रावधान अथवा हानि को कम नहीं दर्शाया गया है।

Lkh,th dh fVIi.kh	izca/ku dk mÙkj
ii) कंपनी ने एअर इंडिया इंजीनियरिंग सर्विसिज लि0 (एआईईएसएल) की इक्विटी पूंजी में 1666.7 मिलियन रुपए का निवेश किया। कंपनी द्वारा लगाई 1666.7 मिलियन रुपए की शेयर पूंजी पर 31.3.2017 को कंपनी की संचित हानि 13060 मिलियन रुपए थी। कंपनी ने एआईईएसएल की इक्विटी पूंजी में निवेश के मूल्य में कोई कमी नहीं दिखाई है। इसके परिणामस्वरूप वर्ष के दौरान हानि के लिए प्रावधान को 1666.7 मिलियन रुपए कम दिखाया गया।	एआईईएसएल एमआरओ बिज़नेस में है तथा अभी विकासकाल में है तथा इसे एआई के अतिरिक्त भारत के भीतर विभिन्न एयरलाइन प्रचालकों के बढ़ते बाज़ार से राजस्व अर्जित करने की आशा है, विशेषकर जब एक बार इस कंपनी का नागपुर का एमआरओ इंफ्रास्ट्रकचर पूरी तरह कार्यात्मक हो जाए। आने वाले वर्षों में एआईईएसएल को ऐसे अतिरिक्त बिज़नेस प्राप्त होने की आशा है जिससे वित्तीय स्थिति में सुधार की आशा है। इसलिए संभवतः निवल मूल्य में कमी अस्थायी है। उल्लेखनीय है कि एआईईएसएल मात्र जनवरी 2015 से प्रचालनात्मक है तथा यह बहुत अधिक पूंजी की आवश्यकता वाला उद्योग है जिस कारण लाभ अर्जित करने के लिए इसके विकास काल की अवधि लंबी होती है। टीएपी के अनुसार, कंपनी को निकट भविष्य में ब्रेक/इवेन/पोस्ट नकदी लाभ होने का अनुमान है। अतः जैसाकि लेखों की टिप्पणियों में प्रकट किया गया है निवेश के मूल्य में कमी को इस अवस्था में स्थायी नहीं माना जा सकता है। उल्लेखनीय है कि एआईईएसएल की इक्विटी पूंजी में निवेश की अपेक्षा एआईईएसएल में निवेश से उच्चतर मूल्य की वसूली की आशा है। अतः यह निष्कर्ष नहीं दिया जा सकता है कि एआई का एआईईएसएल में निवेश शून्य माना जाए। अतः वर्ष के लिए प्रावधान अथवा हानि को कम नहीं दर्शाया गया है।
vkLFkfxr dj ifjlaifÙk;ka ¼uksV 47½ 28425-2 fefy;u #i, लेखा मानक–22 जो यह बताता है कि सभी समयावधि अंतर के लिए आस्थगित कर निर्धारण होने चाहिए और ऐसा करते हुए व्यवहार कुशलता बरतते हुए यह ध्यान में रखना जरूरी है कि इन आस्थगित कर परिसंपत्तियों से भविष्य में पर्याप्त कर योग्य आय उपलब्ध होने की निश्चितता बनी हो। कंपनी ने वर्ष 2007–08 और 2008–09 के दौरान के अपने लेखा खाते में 28425.2 मिलियन रुपए की राशि का आस्थगित कर परिसम्पत्ति के रूप में निर्धारण किया । यद्यपि कंपनी ने वर्ष 2009–10 से प्रभावी आस्थगित कर परिसंपत्ति का निर्धारण नहीं किया और 2007–08 और	इस संबंध में निम्नलिखित तथ्य दिए जा रहे हैं : • कंपनी ने एएस–22 के अनुसार अपनी लेखा बहियों में 2007–08 तथा 2008–09 के दौरान 28425.2 मिलियन रुपए की मूल्यह्रास हानि पर आस्थगित कर परिसंपत्तियों का निर्धारण किया है। • आस्थगित कर परिसंपत्तियों के लिए मूल्यह्रास हानि का निर्धारण किया जा सकता है यदि इसके उपयोग में उपयुक्त निश्चितता हो। • वित्तीय वर्ष 2009–10 से विवेक के आधार पर और अधिक परिसंपत्ति का निर्धारण नहीं किया गया। इसलिए, 31 मार्च 2017 को भी निवल आस्थगित कर परिसंपत्तियां 28425.2 मिलियन रुपए रहीं। इस तथ्य को प्रत्येक वर्ष लेखों की टिप्पणियों में दर्शाया जा रहा है।

Lkh,th dh fVIi.kh	iczU/ku dk mÙkj
2008–09 से अग्रेषित आस्थगित कर परिसंपत्ति को बट्टेखाते में नहीं डाला। तद्नुसार, आस्थगित कर सम्पत्तियों के अग्रेषण से आस्थगित कर सम्पत्तियों का विवरण अधिक हो गया और हानि के विवरण में 28435.2 मिलियन रुपए कम दिखाए गए ।	• टीएपी के अनुसार, एआई को निश्चित रूप से लाभ अर्जित करने की आशा है। इसलिए आस्थगित कर परिसंपत्ति को अग्रेषित किया गया है क्योंकि आयकर अधिनियम के अनुसार भावी अनुमत्य लाभ से उक्त राशि को अवशोषित करने में सक्षम होने की बहुत अधिक संभावना है तथा यह इस एएस के संबंध में इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट ऑफ इंडिया द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण के पूरी तरह अनुरूप है। अतः इसे रद्द करने का प्रश्न उपयुक्त नहीं है। इसलिए न तो आस्थगित कर परिसंपत्तियों को अधिक दर्शाया गया और न ही हानि को कम दर्शाया गया है।
pkyw ifjlEifr;k bUoasUVjht+ ¼uksV la[;k 13½ 12767 fefy;u #i, I) इनवेन्टरीज़ नोट 1 (सी) (4) (ii) पर महत्त्वपूर्ण लेखांकन के अनुसार प्रारंभिक इश्यू के समय एक्सपेंडेबल्स/कन्ज़्यूमेबल्स को चार्ज ऑफ किया जाता है केवल उन्हें छोड़ दिया जाता है जो मरम्मत योग्य वस्तुओं की मरम्मत के लिए होते हैं तथा मरम्मत कार्य के पूरा होने पर संबंधित कार्य आदेश की समाप्ति पर व्यय में दर्शाए जाते हैं। कंपनी ने पहले ही पूरे हो चुके कार्य आदेशों के लिए जारी एक्सपेंडेबल्स हेतु 324.37 मिलियन रुपए का प्रावधान नहीं किया। जारी किए गए एक्सपेंडेबल्स का प्रावधान न किए जाने के परिणामस्वरूप वर्ष के दौरान हानि को 324.37 मिलियन रुपए कम दिखाया गया तथा इसी राशि से इनवेंटरी को अधिक दिखाया गया।	एक्सपेंडेबल्स मदों हेतु 324.37 मिलियन रुपए का प्रावधान न किए जाने के संबंध में उल्लेखनीय है कि इन मदों का मूल्य इनवेंटरियों के 'कार्य जारी' शीर्ष के तहत सम्मिलित किया जाता है क्योंकि प्रक्रिया के अनुसार खपत प्रविष्टि को केवल तभी लेखाबद्ध किया जाता हैं जब कार्य आदेश समाप्त कर दिए जाते हैं या जारी कार्य पूरा हो जाता है। अतः न तो हानि को कम दर्शाया गया है और न ही इनवेंटरी को अधिक दर्शाया गया है।
ii) इनवेंटरी शेष (संबंधित जीएल में दर्शाया गया) के समर्थन में मदवार विवरण न होने के कारण एकत्रित इनवेंटरी की राशि 12723.31 रुपए मिलियन को सुरक्षित नहीं माना जा सका।	एआई ने इनवेंटरी शेषों के साथ इनवेंटरी प्रमाण–पत्र सरकारी लेखा परीक्षा को उपलब्ध कराया जो कुल जीएल शेषों से मेल खा रहा है।
egÙoi.kZ y{kkdu uhfr ij fVIif.k;k fLFkj ifjlEifÙk;k ij ¼d½¼i½[k I) उक्त नोट के अनुसार रोटेबल्स/रिपेयरेबल्स को स्थिर सम्पत्ति में दिखाया गया। हांलाकि यह पाया गया कि 31 मार्च 2017 तक रिपेयरेबल्स को इनवेंटरी में दर्शाया गया जो कंपनी की लेखा नीति के अनुसार	रिपेयरेबल्स को स्थिर परिसंपत्तियां माना जाता है तथा इस नीति का पिछले 5 वर्षों से निरंतर अनुसरण किया जा रहा है। रिपेयरेबल्स को स्थिर परिसंपत्तियों के रूप में दर्शाया जाता है तथा उन पर मूल्यह्रास का प्रावधान किया जाता है क्योंकि

Lkh,th dh fVIi.kh	izca/ku dk mÙkj
नहीं है।	इनका उपयोग जीवन बढ़ सकता है। दूसरी ओर रिपेयरेबल से संबंधित इनवेंटरी जिसका उपयोग जीवन बढ़ाया नहीं जा सकता है, उसे इनवेंटरी के रूप में वगीकृत किया गया है। लेखांकन नीतियों में उल्लिखित शब्द ''रिपेयरेबल'' केवल स्थिर परिसंपत्तियों से संबंधित है तथा स्थिर परिसंपत्तियों के उन कंपोनेन्ट्स से संबंधित है जिनकी मरम्मत की जा सकती है तथा जिनका पुनः उपयोग किया जा सकता है। रिपेयरेबल्स के संबंध में उपयोग की जा रही इस नीति का अनुसरण वर्षों से किया जा रहा है तथा यह कंपनी की लेखांकन नीति के अनुरूप है।
buosaVjht+ iSjk ¼ii½ ii) इस नोट के अनुसार इनवेंटरीज़ का मूल्य निर्धारण वेटेड एवरेज कॉस्ट के अनुसार किया जाता है। तथापि एएस–2 के अनुसार इनवेंटरीज़ का मूल्य निर्धारण लागत या निवल वसूल योग्य मूल्य, जो भी कम हो, के अनुसार होना चाहिए।	एएस 2 के पैरा 3.2 में निवल वसूलीयोग्य मूल्य की दी गई परिभाषा के अनुसार, ''निवल वसूलीयोग्य मूल्य सामान्य रूप के वह अनुमानित बिक्री मूल्य है जिसमें से कम्पलिशन की अनुमानित लागत और बिक्री करने के लिए आवश्यक अनुमानित लागत में से घटा दिया जाता है। परिभाषा से यह देखा जा सकता है कि ''इनवेंटरी का निवल वसूलीयोग्य मूल्य सामान्य रूप में बेची जाने वाली इनवेंटरी है।'' तथापि, एअर इंडिया के मामले में, इनवेंटरी में मुख्य रूप से विमान के पार्टस, कन्ज्यूमेबल्स और एक्सपेंडेबल्स सम्मिलित हैं – जो सामान्य रूप से बिक्री के लिए नहीं हैं अपितु केवल आंतरिक उपभोग के लिए हैं इसलिए इन्हें भारित मूल्य पर आंका गया है। चूंकि इनवेंटरी में विक्रय हेतु 'फिनिश्ड गुड्स' जैसी कोई इनवेंटरी सम्मिलित नहीं है, इसलिए 'रियलाइजेबल वेल्यू' शब्द को हटा दिया गया है क्योंकि न्यूनतम लागत पर मूल्यांकन अथवा निवल वसूलीयोग्य मूल्य का प्रश्न केवल तभी होगा जब कुल इनवेंटरियों में विक्रय वाली वस्तुएं सम्मिलित होंगी। साथ ही एएस–2 के अनुच्छेद 24 की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है जिसके अनुसार इनवेंटरी में उत्पादन में प्रयोग में लाई जाने वाली सामग्री तथा अन्य सप्लाईज को लागत से कम पर नहीं लिखा जाता है यदि उनका उपयोग निर्मित उत्पाद के लिए किया जाता है तथा उन्हें लागत पर अथवा उससे अधिक मूल्य पर बेचने की आशा होती है। कंपनी में रखी सामग्री को निर्मित सामान में परिवर्तित नहीं किया जाता है तथा/अथवा बेचा जाता है। अतः मूल्यांकन के लिए एनआरवी पर विचार करने का प्रश्न संगत नहीं है।

Lkh,th dh fVIi.kh	iczc/ku dk mÙkj
	इनवेंटरी के मूल्यांकन की पॉलिसी को उपयुक्त रूप से प्रकट किया गया है कि ''इनवेंटरियों का मूल्यांकन वेटिड औसत लागत पर किया जाता है न कि बाजार मूल्य पर क्योंकि कंपनी के पास कोई इनवेंटरी विक्रय के लिए नहीं है''।
vU; fVIif.k;k **ukV l- 43 ch ¼d½** **vkijfVx yht** नोट सं. 43 बी (क) (i) का संदर्भ लें जिसमें कंपनी द्वारा नॉन केंसलेबल ऑपरेटिंग लीज़ पर लिए गए 31 विमानों का उल्लेख है। संविदा की बाध्यता के अनुसार, लीज अवधि समाप्त होने पर निर्धारित तकनीकी शर्तों के अनुसरण में कंपनी को 31 विमान पट्टादाता को रिडिलीवर करने होंगे। इनकी रिडिलीवरी से पहले इनके तकनीकी निरीक्षण, मेंनटेनेंस चैक्स, मरम्मत लागत इत्यादि पर लागत आएगी। चूंकि इन कार्यों पर होने वाले खर्चे का आकलन संभव नहीं है, इसलिए इसकी देयता को आकस्मिक देयताओं के रूप में दर्शाया जाना चाहिए।	पुनः डिलीवरी लागत पर देय कोई राशि या अपसाइड शेयरिंग व्यवस्था के तहत प्राप्य राशि निश्चित नहीं है तथा लाभ एवं हानि खाते में उस पर बुकिंग के लिए विचार नहीं किया जा सकता। साथ ही, सरकारी लेखा परीक्षा द्वारा पैरा में बताया गया है कि ''इन कार्यों के लिए लागत का सही आकलन किया जाना संभव नहीं हैं ''अतः यह संभव नहीं है कि इन विमानों की डिलीवरी के समय देय या प्राप्य राशि का अनुमान लगाया जाए। अतः राशि जिसकी मात्रा निश्चित नहीं की जा सकती को न तो फर्म देयता और न ही आकस्मिक देयता के रूप में उपलब्ध कराया जा सकता।
ukV l- 51 **xkbx dUlu** लेखों का भाग बनने वाली टिप्पणियों के नोट संख्या 51 का संदर्भ लें जिसमें यह प्रकट किया गया है कि ''कंपनी ने प्रचालनात्मक/वित्तीय निष्पादन जैसे सीट घटक, यात्री वहन, विमान उपयोग इत्यादि में समग्र रूप से सुधार दर्शाया है, अप्रत्याशित परिस्थितियों को छोड़कर कंपनी आशावान है कि वह टीएपी में वर्णित समय–सीमा से पूर्व ही कैश पॉज़िटिव स्थिति में लौट आएगी। टर्न अराउंड योजना (टीएपी)/वित्तीय पुनर्संरचना योजना (एफआरपी) के तहत कंपनी को वित्त वर्ष 2012–13 से ब्याज कर मूल्यह्रास और ऋण परिशोधन (ईबीआईटीडीए) से पूर्व कैश पॉज़िटिव और वित्त वर्ष 2017–18 से कैश सरप्लस करने की आशा थी। तथापि, वित्तीय पुनः संरचना योजना के तहत नवीनतम प्रस्तावित वित्तीय योजनाओं के अनुसार कंपनी अब वित्त वर्ष 2018–19 से ही कैश	टीएपी/एफआरपी के कार्यान्वयन से कंपनी के वित्तीय तथा प्रचालनात्मक निष्पादन में समग्र सुधार हो रहा है। इसे नीचे देखा जा सकता है: ¼#Ik, djkM+ e½ (see table below)

fooj.k	2013&14	2014&15	2015&16	2016&17
कुल राजस्व	20140.59	20606.27	20524.56	20032.29
कुल व्यय	26420.19	26466.18	24361.33	25797.40
असाधारण मदों से पूर्व निवल लाभ/(हानि)	(6939.45)	(5853.02)	(3835.21)	(3619.72)
कर पश्चात निवल लाभ/(हानि)	(6279.60)	(5859.91)	(3836.77)	(5765.11)

Lkh,th dh fVIi.kh	izca/ku dk mÙkj
पॉज़िटिव होगी। इसलिए यह प्रकटन कि ''अप्रत्याशित परिस्थितियों को छोड़कर कंपनी आशावान है कि वह टीएपी में वार्णित समय–सीमा से पूर्व ही कैश पॉज़िटिव स्थिति में लौट आएगी'' उस सीमा तक सही नहीं है।	देखा जा सकता है कि पिछले कुछ वर्षों में निवल हानि (असाधारण/आपवादिक मदों के पूर्व) में निरंतर कमी आई है। वर्ष 2016–17 में भी निवल हानि में वृद्धि मुख्य रूप से जेडीसी सिफारिशों के अनुपालन में वेतन ढ़ांचे को युक्तिसंगत बनाने के लिए 1298.16 करोड़ रुपयों की राशि का असाधारण/आपवादिक प्रावधान करने के कारण तथा एसएफआईएस स्क्रिप्स राजस्व के 847.23 करोड़ रुपयों को बट्टे खाते में डालने के कारण हुई है। कंपनी टीएपी में दर्शाए अनुसार वित्त वर्ष 2012–13 से ईबीआईटीडीए सकारात्मक हुई है। सरकार टीएपी/एफआरपी के प्रति भी प्रतिबद्ध रही है तथा टीएपी/एफआरपी की सिफारिशों के अनुसार एआई के लिए निरंतर फंड जारी करती रही है। साथ ही, कंपनी में प्रचालनात्मक पैरामीटरों जैसे यात्री भार घटक, एएसकेएम/आरपीकेएम, ले जाए गए यात्री राजस्व की संख्या आदि में समग्र सुधार हुआ है। इस निरंतर सुधार तथा आगे बढ़ने के साथ ही कंपनी के वित्त वर्ष 2018–19 में नकद सकारात्मक होने की संभावना है तथा कंपनी इस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास कर रही है।
Lora= ys[kk ijh{kdk dh fjiksVZ vuqyXud 1¼i½jk 1½h fLFkj ifjlaifÙk;ka स्वतंत्र लेखा परीक्षकों ने रिपोर्ट की है कि कंपनी द्वारा स्थिर परिसंपत्ति रजिस्टर मैंटेन किया जा रहा, जो कुछ वैयक्तिक मदों के संबंध में अद्यतन होने की प्रक्रिया में है और इनमें वे मदें भी सम्मिलित हैं जिन्हें ऑन लाइन आइटम और कंपोनेंट्स आइटम्स के रूप में ब्लॉक स्तर पर सैप में स्थानांतरित कर दिया गया है। उपर्युक्त रिपोर्टिंग सीएआरओ 2016 के खंड 3(i) (क) तथा कंपनी (लेखा परीक्षक की रिपोर्ट) आदेश 2016 के संबंध में मार्गदर्शन नोट के पैरा संख्या 34 के अनुसार नहीं है जिसमें इस रिपोर्टिंग को अनिवार्य बताया गया है कि कंपनी स्थिर परिसंपत्तियों की स्थिति और मात्रात्मक विवरण सहित पूर्ण विवरण दर्शाते हुए उपयुक्त रिकॉर्ड मेंटेन कर रही है अथवा नहीं। लेखा परीक्षा के लिए प्रस्तुत इनवेंटरी प्रमाणपत्र से यह नोटिस किया गया है कि 3948.97 रुपए के रिपेयरेबल्स	एआई स्थिर परिसंपत्ति रजिस्टर (एफएआर) को सैप प्रणाली में (लेखा परीक्षकों द्वारा अपनी रिपोर्ट में विचार किए जाने वाली अपेक्षाओं का अनुपालन करता है) मैंटेन कर रही है तथा मात्रात्मक विवरण तथा स्थिर परिसंपत्ति की स्थिति सहित पूर्ण विवरण को पूर्व ऑरेकल प्रणाली से अंतरित कर दिया गया है। विमान, बिल्डिंग, वाहन जोकि परिसंपत्तियों के मूल्य का 95 प्रतिशत से अधिक है, के संबंध में एफएआर को मदवार अपडेट किया गया है। अधिकतर शेष परिसंपत्तियों को सैप में लाइन मदवार अंतरित किया गया है तथा कुछ परिसंपत्तियों को ब्लॉकवार अंतरित किया गया है जिसका लाइन मद विवरण अपडेशन की प्रक्रिया में है।

<table>
<tr><th>Lkh,th dh fVIi.kh</th><th>izc/ku dk mÙkj</th></tr>
<tr><td>रैमको से बाहर मैंटेन किए जा रहे हैं और उनके वर्तमान स्थान की सूचना उपलब्ध नहीं थी तथा उनका वास्तविक सत्यापन नहीं किया गया था। स्वतंत्र लेखा परीक्षकों द्वारा इस तथ्य की सूचना नहीं दी गई है।

अतः स्थिर परिसंपत्तियों के संबंध में स्वतंत्र लेखा परीक्षक द्वारा की गई रिपोर्टिंग सीएआरओ 2016 के अपेक्षाओं के अनुसार नहीं है।</td><td>अतः लेखा परीक्षा रिपोर्ट में दिए गए शब्द अनुसार अपडेशन की प्रक्रिया अभी भी प्रक्रियाधीन है।

तदनुसार सीएआरओ के तहत अपेक्षित रिपोर्टिंग का अनुपालन किया गया।</td></tr>
<tr><td>ekbxs'ku dUVªksy vdkmUV~l dk ukeu& fjdkWUlfy,'ku

लीगेसी सिस्टम से सैप–ईआरपी में डाटा स्थानांतरण के दौरान सृजित किया गया माइग्रेशन कंट्रोल अकाउंट इन लेखों में कुल बकाए को शून्य किए बिना अभी भी मौजूद है।
<table>
<tr><th>ekbxs'ku dUVªksy vdkmUV dk uke</th><th>jkf'k ¼fefy;u e½</th></tr>
<tr><td>एमएम</td><td>773.2</td></tr>
<tr><td>एपी</td><td>47425.4</td></tr>
<tr><td>एआर माइग्रेशन कंट्रोल अकाउंट</td><td>45658.9</td></tr>
<tr><td>एफए माइग्रेशन कंट्रोल अकाउंट</td><td>346619.4</td></tr>
<tr><td>जीएल</td><td>254308.2</td></tr>
</table>
यद्यपि निवल प्रभाव शून्य है, प्रत्येक लेखा माइग्रेशन कंट्रोल अकाउंट का न तो मिलान किया गया है और न ही उसे रद्द किया गया है।</td><td>यह स्पष्ट किया जाता है कि संपूर्ण अंतरण लेखों का कुल शून्य है। स्रोतों के अनुसार अंतरण के दौरान नियंत्रण को सुनिश्चित करने के लिए प्रक्रिया विभाजित कर दी गई थी तथा 5 अंतरण नियंत्रण लेखे सृजित किए गए थे। जिनका पूरा मिलान किया गया तथा जिनका निवल प्रभाव शून्य है। साथ ही इसका वर्ष के लाभ में कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।</td></tr>
<tr><td>(ii) 89 परिसम्पत्तियों सहित 18404 परिसंपत्तियां जिनमें भूमि और भवन सम्मिलित हैं, कंपनी के सैप–ईआरपी सिस्टम में मौजूद हैं वे शून्य अर्जन मूल्य पर दर्शाई गई हैं। इन 18404 परिसम्पत्तियों में से 781 परिसम्पत्तियां चालू वित्त वर्ष 2016–17 के दौरान खरीदी गई थीं। भूमि और भवन वाली इन 89 परिसम्पत्तियों को शून्य मूल्य पर दर्शाया जाना लेखा मानक 10 की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं है जिसके अनुसार किसी स्थिर परिसम्पत्ति का सकल अंकित मूल्य या तो उसकी मूल लागत होना चाहिए अथवा मानक के अनुरूप पुनर्मूल्यांकन राशि होना चाहिए।</td><td>इस संबंध में उल्लेखनीय है कि ऐसी बहुत सारी परिसंपत्तियां थीं जिन्हें पूर्व कंपनियों की बहियों में पूरी तरह से मूल्यह्रासित किया गया था अतः उन्हें 2007 में विलय की तिथि में शून्य मूल्य में अंतरित किया गया।

साथ ही लेखा परीक्षा द्वारा उल्लिखित मदें सैप में दर्शाए गए शून्य अर्जन मूल्य की परिसंपत्तियों को दर्शाती हैं जिनके कारण निम्नलिखित हैं:

क) पूर्व आईएएल तथा एआईएल के विलय के समय अंतरित पूर्ण मूल्यह्रासित परिसंपत्तियां।

ख) नई निर्मित सहायक कंपनियों एआईईएसएल तथा एआईएटीएसएल में अंतरित परिसंपत्तियां।</td></tr>
</table>

Lkh,th dh fVIi.kh	iccU/ku dk mÙkj
	ग) 5000 मूल्य से कम की परिसंपत्तियों को जोड़े गए वर्ष में पूरी तरह मूल्यह्रासित किया गया। घ) कुछ परिसंपत्तियों के लिए सैप में सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से परिसंपत्तियां संख्या सृजित की गई किंतु वर्ष की समाप्ति पर प्रापण कार्य अभी किया जाना है। उल्लेखनीय है कि इन परिसंपत्तियों पर आंतरिक नियंत्रण स्थापित करने के लिए इन परिसंपत्तियों की मूल लागत को सैप में शून्य मूल्य पर रखा गया है। अतः बहियों में दर्ज परिसंपत्तियों का मूल्य मूल लागत है तथा एएस–10 के अनुसार है।